Vol 2 Issue 10 Nov 2012

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

# Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

**Welcome to ISRJ**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

**Regional Editor**

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

## *International Advisory Board*

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldisrj.lbp.world**

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.10,Nov. 2012
**ISSN:-2230-7850**
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

# भारत में जनजातीय कला का स्वरूप और विकास की संभानाऐ : (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

*मीनू तंवर*

*समाजशास्त्र विभाग , चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.*

***सांराश*:**

भारतीय जनजातियां कला और संस्कृत के संवाहक के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। यद्यपि विज्ञान और औद्योगिकी की अवस्थाओं से जनजातीयां वाकिफ नहीं है। परन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि वे कला से अनभिज्ञ हो और प्रकृति के निकट रहने के कारण उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति में प्रकृति का सौन्दर्यबोध अधिक होता है, जनजातीय कला में चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्य–संगीत आदि का अद्भुत संयोग मिलता है। जनजातीयां अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं उत्सवों, त्यौहारों आदि को चित्रों, गीत संगीत के माध्यम से प्रस्तुत करती है। इनकी कला में सरलता और जटिलता पाया जाता है। भारत के अनेक राज्यों में जनजातीय कला और संस्कृति को बचाए रखने के लिए सरकार प्रयासरत है। ताकि लुप्त होती जनजातीय संस्कृति को बचाया जा सके और समाज में जनजातीय कला को सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो सके।

**शब्द संकेतः–**
आलौकिक, कलात्मकता, प्रकृतिवाद, अंधविश्वास, पौराणिक, गोदना, प्रशिक्षण, गिरिजन।

**परिचयः–**

प्रत्येक मानव या मानव समाज संस्कृति का अधिकारी है और कला उसी मानव संस्कृति का आवश्यक अंग है। इस कारण कला ने केवल अति प्राचीन है अपितु सार्वभौमिक भी है। मनुष्य एक बहुमुखी प्रतिभा का धनी है। वह न केवल अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में सन्तुष्ट हुआ है बल्कि कला, सौन्दर्य की तरफ भी आकर्षित हुए बिना भी नहीं रह सका है। यही कारण है कि जब वह आदिकाल में गुफाओं, पर्वतों और प्रकृति के निकट रहता है तब भी कला प्रेम उस काल के आभूषणों, हथियारों, भित्ती चित्रों कच्ची धातुओं के सामानों में परिलक्षित की होता है। कला की दृष्टि से जनजातियां अपना एक विशिष्ठ स्थान रखती है यद्यपि विज्ञान और औद्योगिकी की अवस्थाओं से जनजातियां वाकिफ नहीं है परन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि वे कला से अनभिज्ञ हो प्रकृति के निकट रहने के कारण उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति में प्रकृति का सौन्दर्यबोध अधिक होता है।

**जनजातियां क्या है?**

जनजाति व्यक्तियों का वह समूह है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करती है।

भारतीय संविधान की पांचवी अनुसूची में जनजाति शब्द का उल्लेख किया गया है। वैसे तो इन्हें आदिवासी अर्थात् आदिकाल (Primitive) मूल निवासी कहा जाता है। संस्कृत साहित्य में इन्हें 'अताविक' अर्थात् वनवासी या गिरिजन भी कहा गया है। इनके अपने धर्म और संस्कृति है जो आज भी आधुनिक सभ्यता के प्रभावों से मुक्त है। भारतीय जनजातियां कुल जनसंख्या का 8.2ः होते हुए भी अशिक्षित और तथाकथित सभ्यता से दूर है किन्तु ये गौरव की बात है कि इन्होंने अपने अस्तित्व एवं संस्कृति को पश्चिमी संस्कृति के इतने प्रचार प्रसार के बाद भी बरकरार रखा।

**जनजाति कला क्या है?**

डॉ. हॉबल ने लिखा है कि आदीकालीन कला क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में हम यह कहे कि आदीकालीन कला आदिम लोगों की कला है।

ई.आर. लीच के अनुसार जनजातीय लोग कला की वस्तुओं का उपयोग धार्मिक उत्सवों, निजी वस्तुओं की सजावट तथा मृत पूर्वजों की याद में स्मारक इत्यादि बनाने हेतु करते थे।

जनजातीय कला के विषय में उपरोक्त परिभाषाओं के अनुसार ये कहा जा सकता है कि यह कला धन तथा अन्धविश्वासों द्वारा अत्याधिक प्रभावित होती है। जनजातीय समाजों में आलौकिक शक्तियों के प्रति आदर, दया, श्रद्धा, और डर की भावना होती है और जनजातीयों इन अलौकिक शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए चित्रों की गुदाई, गीत संगीत, नृत्य, मूर्तियों का निर्माण करके अनायास ही कलात्मक सृष्टि कर देते है श्री हॉबल लिखते है कि "आदिम लोगों की कला का क्षेत्र कलात्मक दृष्टिकोण से भद्देपन से लेकर, उच्च कौशल तक, बालकों की सरलता से लेकर आश्चर्यजनक जटिलता तक प्रकृतिवाद व यथार्थवाद से लेकर औपचारिक वाद तक विस्तृत है। इसकी अभिव्यक्ति कहां और किस रूप में होगी, यह किसी निश्चित नियम के आधार पर नहीं कहा जा सकता।"

**जनजातिय कला की विशेषताएँः–**

1. भारतीय जनजातिय कला में सरल और जटिल दोनों प्रकार की शैली का समावेश देखने को मिलता है।
2. भारतीय जनजातियों की कला में यथार्थवाद और संकेतवाद की झलक भी देखने को मिलती है।
3. इनमें मूर्तिकला तथा चित्रकला जिसमें पत्थर, लकड़ी, आदि की मूर्तियां, गुफाओं, दीवारों खम्भो औजारों और आभूषणों के चित्र भी बनाए जाते है।
4. जनजातिय कला में विशेषता पौराणिक कथाओं का वर्णन चित्रों के माध्यम से किया जाता है।
5. ये जनजातियां विभिन्न देवी–देवताओं के मुखौटे बनाकर उन्हें अपनी शरीर पर धारण करते हुए नृत्य करते है।
6. जनजातिय कलाओं में धर्म और जादू तंत्र, अन्धविश्वास का वर्णन, मूर्तिकला, नाटक, नृत्य के रूप में देखने को मिलता है।

**भारतीय जनजातिय कला के स्वरूपः–**

भारत की जनजाति कला में जीवन की उमंग और उल्लास झलकता है। इसमें जीवन है और जीवन से जुड़े तमाम पहलू है जनजातियों की वन सम्पदा ही सम्पत्ति है और प्राकृतिक सहज जीवन ही उनका स्वभाव। प्राकृतिक उपलब्ध संसाधनों से ही ये अपनी अभिव्यक्ति को रूप और आकार देते हैं, जनजातियों की कलाकृतियां अधिकतर मिट्टी, पत्थर, लकड़ी, बांस और धातुओं की बनी होती है। जनजातीय लोग देवताओं को पत्थरों में नक्काशी करके रखने का चलन है। आदिकाल से चली आ रही स्टोन टेबलेटस बनाने की यह प्रथा मिश्र और युरोप में प्रचलित थी। राजस्थान के झील प्रदेश में सीरा बावसी था वीरा के शिल्प को घोड़ों पर सवार ओर पैदल दिखाया जाता है। राजस्थान में जयपुर के आस–पास के क्षेत्र बांसवाड़ा के गांव तलवाड़ा प्रतापपुर और सागवाड़ा जनजातीय कला के केन्द्र है। राजस्थान के अलावा कोरापुर तथा गजम की सोरा जनजाति में दीवारों पर चित्र बनाने की प्रथा है।

टोडा जनजाति में मिट्टी के बर्तनों में विभिन्न प्रकार की चित्रकारी तथा मानव आकृति बनाने की निपुणता के प्रमाण मिले है। कोचीन के 'कादर' बड़ी सुन्दर कंघियाँ बनाते है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ की माडिया जनजाति में कलात्मक कंघियाँ उत्सवों पर उपहार में दी जाती है।

बांस की बनी चीजों में कामठा तीर, धनुष, बांसुरी, पैरनी, हड़ेली, ढालरा, झूला वगैरह है इनकी आयताकार और त्रिभुजाकार आकृति भूल–भूलैया का आभास कराती है। जनजाति में आभूषणों का भी खास महत्त्व है ये पीतल, तांबा, चांदी व अन्य धातुओं की मालाएं, चूड़ियां पाजेब, हंसली, संकली, नेवरा तोड़ा जो कि सिर से पैरों तक के आभूषण है। इसके अतिरिक्त शरीर पर गोदना (अंग लेखन) करवाने की कला भी इनमें प्रमुख है। ये लोग अपने देवताओं के चित्र अपने नाम पशु पक्षीयों के चित्रों को भी शरीर पर गुदवाते हैं।

जनजातियों में संगीत और कला को जीवन्त बनाये रखने में संगीत और नृत्य का भी विशेष महत्त्व हैं धार्मिक उत्सवों पर में नृत्य करते हैं भारतवर्ष में भोटिया, गोड़, गुडिया आदि जनजातीयों में तो युवाग्रहों में नृत्य संगीत का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। और यही पर युवाओं में प्रेम बंधन होता है जो कि बाद में विवाह में परिणत हो जाता है।

वैरियर एल्विप ने अपने लेख 'ट्राइबल आर्ट' में कहा है जनजातीय गांवों में एक विशिष्ठ कलाकार होता हे जो चित्रों को बनाता है और उसे इन चित्रों की प्रेरणा उसे स्वप्न में मिलती है। एल्विन ने अपनी रचना The Trible Art of Middle India में कहा है कि यदि जनजातीयों पर बाह्य प्रभाव अधिक हावी रहता हे ये अपनी कला और संस्कृति को अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रख पायेंगे।

कला के बिना मानव का अस्तित्व शायद असम्भव न था फिर भी इन दोनों को मानव और कला को एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता बील्स और हॉइजर के शब्दों में कला एक क्रिया है जो इसके व्यवहारिक या उपयोगी मूल्यों के अतिरिक्त कलाकार को भी संतुष्टि प्रदान करती है। कला मात्र कला के लिए है यह कथन जनजातीय कला के लिए अधिक उपयुक्त प्रतीत नहीं होता है। अर्थात् सौन्दर्य अथवा सजावट के साथ–साथ धार्मिक या जादूई अथवा सामाजिक पक्ष भी उसमें निहित होता है। भारत के अनेक राज्यों में जनजातीय कला और संस्कृति को बचाए रखने के लिए प्रयास किया जाता है जिनमें आन्ध्र प्रदेश की बैल मैटल, और बजारा एम्ब्राइडरी, छत्तीसगढ़ की बांस और लकड़ी पर शिल्पकारी, डोकरा हस्तलकला, मध्यप्रदेश का बाध प्रिन्ट, मणिपुर स्टोन पॉट्टी, राजस्थन की पत्थर नक्काशी पैचवर्क, और टांका शिल्प पश्चिम बंगाल की नृत्य शैली और जूट उत्पादों को सहजने के लिए सरकार निरन्तर प्रयासरत रहती है।

जनजातीय समुदाय को ऊंचा उठाने में सरकार ने अनेक प्रयत्न किये आज भी वे अपनी परम्परागत, संस्कृति को अपनाए हुए है। कला का संस्कृति से अत्याधिक निकट का सम्बन्ध है। अतः जनजातीय संस्कृति को जीवित रखने के लिए आवश्यक है कि उनकी कला को मात्र "संग्रहालय की वस्तु" न बनाकर उसके विकास की ओर ध्यान दिया जाए शिक्षा के माध्यम से इसके अस्तित्व को बनाये रखा जा सकता है। आज इक्कीसवीं शताब्दी में जहां समूचा विश्व विकास की नई गाथा लिख रहा है, ऐसे में जनजातीय विकास पर विशेष रूप से शैक्षणिक, आर्थिक, रोजगार, कला संस्कृति इत्यादि के लिए ज्यादा प्रभावी कार्यक्रम चलाने होंगे जिससे इनके कला को जीवन्त रखा जा सके।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–**

1.Habal, E.A. : Readings in Anthropology. McGraw-Hill Books.
2.Mazoomdar, Madan : An Introduction to Social Anthropology, Asia Pub.House, Bombay
3.Verrier, Elwin : Tribal Art (Publication Division, Govt. of India, New Delhi)
4.Prabhu, P.H. : Hindu social Organization. Popular Prakashan, Bombay.
5.Srinivas, M.N. : Method in Social Anthropology. Asia Pub. House, Mumbai.
6.मुखर्जी,रविन्द्रनाथ: सामाजिक मानव शास्त्र की रूपरेखाए विवेक प्रकाशन दिल्ली–7

7.उप्रेती, हरिशचन्द्र: भारतीय जनजातियां संरचना एव विकासए राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

*मीनू तंवर*
*समाजशास्त्र विभाग , चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.*

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.oldisrj.lbp.world